योगविचार

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

योग पञ्चाङ्ग का चौथा अङ्ग है। योग शब्द का अर्थ होता है मेल अथवा जोड़ना। योगशास्त्र में शक्ति का शिव से मिलन अर्थात् मूलाधार की कुण्डलिनी शक्ति को सहस्त्रार में सदाशिव से मिलाना ही योग है किन्तु ज्योतिषशास्त्र में काल के दो अवयवों का मिलाना ही योग के नाम से जाना जाता है। चन्द्र और सूर्य की गति में जब 13 अंश 20 कला चलते हैं, उतने समय में एक योग होता है। सामान्य गति से सूर्य एक दिन में एक अंश और चन्द्रमा 13-20 चलता है, अतः 24 घण्टे में सामान्य गति से दोनों की गति का योग-

13-20

+1-00

14-20 होगा। इसलिए एक योग का परिमाण 24 घण्टे से कम होता है।

योग भी नक्षत्रों की तरह कोई तारापिण्ड नहीं है, अपितु यह तो सूर्य के अन्तर अथवा जोड़ की माप है।

योगों की पद्धति बहुत प्राचीन मानी जानी चाहिए। याज्ञवल्क्य स्मृति में व्यतिपात योग का उल्लेख है। हर्षरचित में बाण ने कहा है कि जब हर्ष का जन्म हुआ तब व्यतिपात जैसे दोषों से दिन रहित था। पञ्चाङ्गों में दो प्रकार के योगों की गणना की जाती है जिसका विवेचन आगे किया जा रहा है-

1. **विष्कम्भादि योग-**

इन योगों की कुल संख्या 27 है जिनके नाम एवं इनके स्वामी निम्न प्रकार है-

योग का नाम	**स्वामी**

विष्कम्भ	यम
प्रीति	विष्णु
आयुष्मान	चन्द्र
सौभाग्य	ब्रह्म
शोभन	बृहस्पति
अतिगंड	चन्द्रमा
सुकर्मा	इन्द्र
धृति	जल
शूल	सर्प
गंड	अग्नि
वृद्धि	सूर्य
ध्रुव	भूमि
व्याघात	वायु
हर्षण	भग
वज्र	वरुण
सिद्धि	गणेश
व्यतिपात	रुद्र
वरीयान	कुबेर
परिघ	विश्वकर्मा
शिव	मित्र
सिद्ध	कार्तिकेय
साध्य	सावित्री

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

शुभ	लक्ष्मी
शुक्ल	पार्वती
ब्रह्म	अश्विनीकुमार
ऐन्द्र	पितर
वैधृति	अदिति

उपर्युक्त 27 योगों में विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गंड, व्याघात, वज्र, व्यतिपात, परिघ और वैधृति नामक 9 योग दुर्योग कहे गये हैं, शेष 18 योग सुयोग कहे गए हैं। समस्त शुभ कार्यों में व्यतिपात और व्यतिपात योग वर्जित हैं। परिघ योग का पूर्वार्ध, विष्कम्भ और वज्र योग की 3 घटी, व्याघात की 9 घटी, शूल की 5 घटी, गंड और अतिगंड की प्रारम्भ में 6 घटी शुभ कार्यों में त्याज्य है। लग्न शुद्ध होने पर दुर्योगों के दोष नष्ट हो जाते हैं।

1. आनन्दादि योग- यह योग नक्षत्र और वार के संयोग से बनते हैं। इनकी कुल संख्या 28 है। इन योगों को जानने की विधि यह है कि रविवार को अश्विनी नक्षत्र से गिने, सोमवार को मृगशिरा से, मंगलवार को आश्लेषा से, बुधवार को हस्त से, गुरुवार को अनुराधा से, शुक्रवार को उत्तराषाढा से तथा शनिवार को शतभिषा नक्षत्र से गिनना चाहिए। जैसे रविवार को अश्विनी नक्षत्र हो तो आनन्द योग होगा और भरणी हो तो कालदण्ड योग होगा। इसी प्रकार अन्य योगों को समझ सकते हैं।

आनन्दादि चक्र

योग	**रविवार**	**सोमवार**	**भौमवार**	**बुधवार**	**गुरुवार**	**शुक्रवार**	**शनिवार**	**फल**
आनन्द	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	सिद्धि
कालदंड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पूर्वाभाद्रपद	मृत्यु
धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्रपद	दुःख
धाता	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	भाग्य
सौम्य	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	सुख

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पूर्वाभाद्रपद	भरणी	क्षति
केतु	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्रपद	कृत्तिका	दुर्भाग्य
श्रीवत्स	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	सुख
वज्र	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	क्षय
मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पूर्वाभाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	हानि
छत्र	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्रपद	कृत्तिका	पुनर्वसु	सम्मान
मित्र	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	शुभ
मानस	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	भाग्य
पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पूर्वाभाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	लाभ
लुम्बक	स्वाती	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्रपद	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	हानि
उत्पात	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	मरण
मृत्यु	अनुराधा	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	मरण
काण	ज्येष्ठा	अभिजित	पूर्वाभाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	दुःख
सिद्धि	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्रपद	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	सिद्धि
शुभ	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	सुख
अमृत	उत्तराषाढा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	सम्मान
मुसल	अभिजित	पूर्वाभाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	क्षति
गद	श्रवण	उत्तराभाद्रपद	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	मूल	रोग
मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढा	वृद्धि
रक्ष	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढा	कष्ट
चर	पूर्वाभाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	सिद्धि
सुस्थिर	उत्तराभाद्रपद	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	मूल	श्रवण	गृहारम्भ
प्रवर्धमान	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढा	धनिष्ठा	विवाह

E-learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi

कुछ अन्य पूर्ववर्णित योगों की चर्चा यहाँ की जा सकती है।